ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

द्युमन्तं शुष्ममाभर।

सामवेद 1325

हे शक्तिदायक प्रभो! हमें शुभ शक्ति दो।

O the Bestower of strength! Bistwo on us the strength that will bring glory.

वर्ष 40, अंक 17 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 फरवरी, 2017 से रविवार 26 फरवरी, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

देशभर में हर्षोल्लास, उत्साह एवं धूम-धाम से मनाया गया महर्षि दयानन्द सरस्वती का 193वां जन्मोत्सव

स्थान-स्थान पर हुए – सार्वजनिक यज्ञ, प्रवचन, भजन, प्रसाद-ऋषि लंगर-साहित्य वितरण, शोभायात्रा, प्रभात फेरी, प्रतियोगिता, भजन संध्या एवं संस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन

दिल्ली नगर निगम द्वारा महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि – आर्यसमाज रोड (सागरपुर), महर्षि दयानन्द लॉन टेनिस स्पोर्ट कॉम्पलेक्स (कीर्ति नगर) एवं महर्षि दयानन्द वाटिका (बाली नगर) के हुए नामकरण

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थानों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज सागरपुर के सहयोग से नगरवन पार्क, सागरपुर नई दिल्ली में हुआ

भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन कार्यक्रम : वरिष्ठ आर्यजनों का किया सम्मान

आपके क्षेत्र में किस प्रकार मनाया गया महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव – रिपोर्ट भेजें : सम्पूर्ण आयोजनों की विस्तृत सूचना एवं चित्रमय झांकी अगले अंक में प्रकाशित होगी

चलो केरल! चलो केरल!! केरल चलो!!!

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत दिल्ली सभा के सहयोग से

महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउण्डेशन, कोझिकोड (केरल) के नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन एवं दक्षिण भारतीय वैदिक सम्मेलन

1-2 अप्रैल, 2017 (शनिवार एवं रविवार)

सान्निध्य	उद्घाटन	अध्यक्षता
आचार्य एम. आर. राजेश	महाशय धर्मपाल	श्री सुरेशचन्द्र आर्य
अध्यक्ष, कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन	चेयरमैन, एम.डी.एच	प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

समारोह में भाग लेने के इच्छुक आर्यजन अभी से अपनी रेल/हवाई टिकटें अभी से आरक्षित करवा लेवें। कोझिकोड (कालीकट) केरल के लिए हवाई सेवाएं एवं रेल सेवा – राजधानी एवं अन्य रेलगाड़ियां उपलब्ध हैं। साधारण आवास – धर्मशाला/गैस्ट हाउस सुविधा एवं भोजन निःशुल्क है। एसी 2 स्टार होटल लगभग 1000/- रुपये प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से मिलते हैं। एक कमरे में दो व्यक्तियों को ठहराया जाएगा। कृपया अपनी टिकट की प्रति श्री सन्दीप आर्य जी को ईमेल- daps.sandeeparya@gmail.com या व्हाट्एप्प द्वारा 9650183339 पर तत्काल भेज देवें, ताकि उचित व्यवस्था की जा सके। रेल/हवाई जहाज यात्रा सम्बन्धी विवरण पृष्ठ 5 पर दिया गया है। अधिक जानकारी के लिए श्री एस. पी. सिंह जी 9540040324 से सम्पर्क करें।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर समारोह को सफल बनाएं एवं समारोह के साक्षी बनें

निवेदक

प्रकाश आर्य (मन्त्री), डॉ. राधाकृष्ण वर्मा (उप प्रधान) – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
धर्मपाल आर्य (प्रधान), विनय आर्य (महामन्त्री) – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
विवेक शिनॉय (संयोजक) – कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन, कालीकट

आर्य परिवार
होली मंगल मिलन समारोह

फाल्गुन पूर्णिमा विक्रमी सम्वत् 2073 तदनुसार रविवार 12 मार्च, 2017 सायं 3-30 से 7-15 बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,
राजाबाजार, कनॉट प्लेस (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-1

नवसस्येष्टि यज्ञ : 3-30 बजे | विशिष्ट संगीत एवं हास्य रंग की प्रस्तुति | बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम

पुष्पों द्वारा होली-मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : 7-15 बजे

वेद-स्वाध्याय

हमारे जीवन में सत्य संकल्प ही उठें

यास्ते शिवास्तन्वः काम भद्रा याभिः सत्यं भवति यद् वृणीषे।
ताभिष्ट्वमस्माँ अभिसंविशस्वान्यत्र पापीरप वेशया धियः।। अथर्व. 9/2/25
ऋषिः **अथर्वा**।। देवता - **कामः**।। छन्दः **त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ- **काम**=हे संकल्पदेव! **याः ते शिवाः**=जो तेरे मंगलमय और **भद्राः**= कल्याणकारी **तन्वः**=स्वरूप हैं, **याभिः**= जिन स्वरूपों से तू **यद् वृणीषे**=जो कुछ वरता है वह **सत्यं भवति**=सत्य हो जाता है, **ताभिः**=उन अपने स्वरूपों के साथ **त्वम्**=तू **अस्मान्**=हममें **अभिसंविशस्व**= सब ओर से प्रविष्ट हो और जो **पापीः धियः**= पापी बुद्धियाँ व संकल्प हैं, उनको अन्यत्र **अपवेशय**= हमसे पृथक् करके दूर कर दे।

विनय - हे काम! हे संकल्पमय देव! भगवान् तुम्हारे द्वारा ही अपनी क्रियाओं को करते हुए सब जगत् को उत्पन्न करते और चलाते हैं। वे जगद्-व्यापक संकल्प! हम मनुष्यों में जो असंख्यात इच्छाएँ, कामनाएँ, संकल्प उठा करते हैं, वे भी सब वास्तव में तुम्हारी ही तरंगें हैं, तुम्हारे ही असंख्यात रूप हैं, परन्तु जो तुम हममें अनगिनत रूप धारण करके प्रकट होते हो, जो हममें अनगिनत इच्छाएँ प्रकट होती हैं, उनमें से हम देखते हैं कि कुछ तो पूर्ण हो जाती हैं, सच हो जाती हैं और बहुत-सी अपूर्ण रहकर केवल हमें दुःखी करने का कारण होती हैं, अतः मैं अब चाहता हूँ कि मुझमें वही इच्छाएँ (संकल्प) उत्पन्न हों जो अवश्य सत्य होनी हों। जो व्यर्थ रहनी हों, पूर्ण न होनी हों, ऐसी इच्छाएं मुझमें प्रकट ही न हों, उत्पन्न ही न हों। मेरी चाहना है कि मैं 'सत्य-संकल्प' हो जाऊँ-ऐसा हो जाऊँ जिसमें संकल्प सत्य ही हों, पर यह कब होगा-यह मैं जानता हूँ कि यह तब होगा-जब मुझमें तुम्हारे मंगलरूप ही (मंगल-संकल्प ही) उत्पन्न होंगे। सब ऋषियों का अनुभव है कि जिन मनुष्यों के हृदय सर्वथा सत्यमय, पूर्णतः सत्यनिष्ठ, अतएव पवित्र होते हैं उनमें जो संकल्प उठता है, अपने संकल्प से वे जो कुछ चाहते हैं, जो कुछ वरते हैं वह अवश्य पूर्ण हो जाता है, चूँकि ऐसे सत्यनिष्ठ हृदय उस सत्यस्वरूप भगवान् से सम रेखा में हो जाते हैं। अतः उनमें वे ही संकल्प उठते हैं जो सर्वथा मंगलमय होते हैं और सब जगत् के कल्याण के लिए होते हैं या यूँ कहना चाहिए उनमें ईश्वरीय संकल्प ही प्रतिध्वनित होते हैं। इस संसार में जो कुछ हो रहा है, सफल हो रहा है, वह सब ईश्वरीय संकल्प ही है और मंगलमय भगवान् का प्रत्येक संकल्प (हम चाहे उसे समझ सकें या न समझ सकें।) सर्वकल्याण के लिए ही है, अतः अब मुझमें ऐसे ईश्वरीय, सत्य हो जाने वाले, भद्र संकल्प ही उठें। अभी तक तो मेरे हृदय में अच्छी-बुरी दोनों प्रकार की कामनाएँ उठती हैं, परन्तु हे संकल्पदेव! अब सब पापी बुद्धियाँ मुझसे निकाल दो! जिस संकल्प में तनिक भी अहित की कालिमा हो, मैल हो, वह अब मुझमें न रह सके। मैं सत्य द्वारा अपने हृदय को शुद्ध करता हुआ यत्न करता हूँ कि अपने ज्ञान के अनुसार कोई भी अशिव, अभद्र संकल्प मुझमें न आये।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

एक अरसे बाद अच्छा बिल

अक्सर जब भी शादी में कम खर्चे और बिना किसी बड़े तामझाम की बात होती है तो आर्य समाज का नाम जरुर आता है। कारण जितना खर्चा आमतौर पर घरों में किटी पार्टी या जन्मदिवस जैसे छोटे-मोटे आयोजनों पर होता है उतने में आर्य समाज मंदिर में वैदिक रीति अनुसार वैवाहिक जोड़े शादी जैसे पवित्र बंधन में बंध जाते हैं। सब जानते हैं कि आज शादी समारोह में एक पवित्र बंधन की रस्म से ज्यादा अन्य शान शौकत का ज्यादा दिखावा हो रहा है। हवन मंत्रोच्चारण और सात फेरों से ज्यादा नृत्य-गीत और शराब आदि में लोग मशगूल रहते हैं। इससे किसी को क्या दिक्कत हो रही है, यह कोई नहीं सोचता?

जल्द ही शादी-विवाह में फिजूलखर्ची रोकने, मेहमानों की संख्या सीमित करने और समारोह के दौरान परोसे जाने वाले व्यंजनों को सीमित करने के मकसद वाला एक निजी विधेयक लोकसभा में पेश किया जाएगा। लोकसभा के आगामी सत्र में विवाह (अनिवार्य पंजीकरण और फिजूलखर्च रोकथाम) विधेयक, 2016 एक निजी विधेयक के रूप में पेश किया जाएगा। लोकसभा में कांग्रेस सांसद रंजीता रंजन यह निजी विधेयक पेश करेंगी जिसमें कहा गया है कि अगर कोई परिवार विवाह के दौरान 5 लाख रुपये से अधिक राशि खर्च करता है तब उसे गरीब परिवार की लड़कियों के विवाह में इसकी 10 प्रतिशत राशि का योगदान करना होगा।

इस विधेयक का मकसद विवाह में फिजूलखर्ची रोकना और सादगी को प्रोत्साहन देना है। शादी दो लोगों का पवित्र बंधन होता है और ऐसे में सादगी को महत्त्व दिया जाना चाहिए लेकिन दुर्भाग्य से इन दिनों शादी विवाह में दिखावा और फिजूलखर्ची बढ़ गई है। जिस कारण शादी एक बंधन कम और एक प्रतियोगिता जैसा नजर आने लगा है। हालांकि समाज का एक बड़ा हिस्सा चाहता है कि शादियों का खर्च उनकी हैसियत के अंदर रहे। वे शादियों के खर्च को सामाजिक तौर पर शान दिखाने की प्रतियोगिता से अलग रखना चाहते हैं। शायद यह बिल यही दर्शाता है कि हमारी शादी जैसी परम्पराएं तो मजबूत रहे बस शादियों के खर्च को सीमाओं में बांधने की कोशिश हो।

अक्सर देखने में आता है कि वैवाहिक समारोह में जहाँ डीजे, कानफोडू. संगीत या अन्य क्रियाकलापों में कोई समय अवधि निश्चित नहीं होती। कई बार तो यह शोर-शराबा पूरी रात चलता रहता है। वहीं अक्सर लोग इस बात की चिंता व्यक्त करते दिख जाते हैं कि पंडित ऐसा हो जो यह रस्म कम से कम समय में पूरी कर दे। जबकि विवाह का असली मकसद मंत्रोचारण के साथ दो आत्माओं को एक पवित्र बंधन में पिरोने का कार्य होता है, मसलन सिर्फ फेरों में ही जल्दबाजी क्यों?

हमारे मन में अक्सर यह सवाल आता है कि आखिर हमारे देश में खास से लेकर आम घर-परिवारों में शादियों या दूसरे समारोहों में इतने पैसे की बर्बादी क्यों होती है? आप इसका आंतरिक अध्ययन करके देखें तो पाएंगे कि भारत के हर समाज में अपनी क्षमता से अधिक पैसे शादी पर खर्च करने की मनोप्रवृत्ति काम करती है। इसके कई कारण होते हैं। अपने दैनिक जीवन में सीमित संसाधनों से अपना काम चलाने वाले व्यक्ति के लिए शादी सिर्फ एक सामाजिक समारोह न होकर यह दिखाने का अवसर बनकर रह गया कि उसने पिछले 25-30 सालों में क्या किया? आर्थिक सीढ़ियों पर कितनी पायदान इस बीच वह चढ़ चुका है। यह दिखाने के लिए बेहद खर्चीली शादी एवं भव्य मकान दिखाना शेष रह गया। हमेशा इस तर्क की चोट पर भी लोग खर्च करते दिख जाते हैं कि शादी ऐसी हो जो लोग सालों तक याद रखें या फिर जिसका खाया है उसका उधार चुकाना है। हालाँकि पंडाल से बाहर आने पर किसी को याद नहीं रहता कि शादी कितनी महंगी और उसमें कितनी भव्यता थी।

पिछले दिनों देश में दो शादियों ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। एक तो अमीर उद्योगपति और पूर्व मंत्री जी. जनार्दन रेड्डी की बेटी ब्रह्माणी की शादी में 500 करोड़ रुपए खर्च और दूसरा सूरत में एक शादी में दूल्हा-दुल्हन के परिजनों ने बारात में आए मेहमानों को केवल एक कप चाय पिलाकर विदाई दी। इस शादी पर केवल 500 रुपये का खर्च आया। यदि इस तरह का कम खर्चे का चलन समाज में बढ़ जाये तो कन्या भूर्ण हत्या से लेकर दहेज तक एक साथ कई विसंगतियों पर लगाम लग जाएगी।

हम विवाह समारोह के खिलाफ नहीं हैं पर इसके खर्च में दिखावे का समर्थन नहीं करते जिनके पास अकूत धन है उनके लिए कोई परेशानी नहीं होती। लेकिन इसी तरह के दिखावे का प्रदर्शन कम पैसे वालों के भीतर भी एक स्वाभाविक भूख पैदा करता है। इसके बाद होता यही है कि आमतौर पर कम आमदनी वाले लोग भी शादी या पारिवारिक समारोहों में कर्ज लेकर सामाजिक प्रतिष्ठा एवं बच्चों की खुशी के नाम पर खर्च करते हैं। कई बार इस तरह के प्रदर्शन की चाह में लोग कर्ज के बोझ तले दब जाते हैं। यह कहां की समझदारी है? कोई व्यक्ति जिन्दगी के किसी क्षेत्र में सफल होकर ज्यादा धन कमाए, इसमें किसी को क्या एतराज होगा! लेकिन विवाह पंडाल के बाहर वधू पक्ष की तरफ से खड़ी की गयी चमचमाती गाड़ी दिखावे की मानसिकता के सिवा अलावा कुछ नहीं। इसी कारण आज उपभोक्तावाद की चकाचौंध में किसी भी रास्ते विलासिता की चीजें हासिल करने की ललक ने युवकों को लालची बना दिया है। अफसोस कि इस नए दौर के नौजवान भी दहेज लेने-देने में कोई शर्म महसूस नहीं करते। अब इस प्रस्ताव के आने से हो सकता है कि दिखावे के इस तरह के आयोजनों पर कुछ लगाम लगे! संसद को चाहिए इस तरह के विधेयक को ध्वनिमत से पारित करें क्योंकि विवाह बेहद सादगी गरिमापूर्ण कर्त्तव्य की एक डगर बने न कि किसी शोर शराबा और फूहड़ता से भरा आयोजन।

-*सम्पादक*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पाकिस्तान का दर्द दुनिया क्यों समझे?

....पाकिस्तान वैश्विक मंच पर खुद को आतंक से पीड़ित देश होने का रोना रोता है। ताजा हमले से भी जाहिर होता है कि यह तथ्य अपनी जगह सही भी है। लेकिन जब काबुल या दिल्ली से आतंक से निपटने की बात की बात दोहराई जाती है तो पाकिस्तान का दोहरा चरित्र देखने को मिलता है। बलूचिस्तान, पश्चिमी वजीरिस्तान आदि में पाक आर्मी आप्रेशन जर्बे अज्ब चलाकर हवाई हमले करती है तो उसे आतंक का खात्मा आतंक के खिलाफ पाक मुहीम बताया जाता है लेकिन जब कश्मीर में भारत की फौज पर उसके पाले सांप जहर उगलते है तो इस्लामाबाद की तरफ से उन्हें आजादी के परवाने कहकर हौंसला अफजाई होती है।.....

14 फरवरी का दिन था। इस्लामाबाद की सड़कों पर जिस युवक-युवती के हाथ में गुलाब का फूल दिखता तो पुलिस गिरफ्तार कर लेती। सरकारी फरमान था कि वेलेंटाइन डे पर कोई युवक-युवती किसी को गुलाब न दे पाए। यह विदेशी त्यौहार है इससे पूरी पाकिस्तानी कौम को खतरा होगा। जिसके बाद एक-एक कर गुब्बारे और फूल बेचने वाले गरीबों को गिरफ्तार किया गया। लेकिन उसी दिन लाहौर की सड़कों पर आतंकी खून खराबा कर हमलों की जिम्मेदारी ले रहे थे। लेकिन इस्लामाबाद बम बारूद से ज्यादा गुलाब के फूलों सा डरा सहमा सा नजर आ रहा था। उसी दिन वहां की मीडिया भी अपनी संस्कृति और इस्लाम की दुहाई देकर वेलेंटाइन डे का विरोध करती नजर आ रही। क्या कोई बता सकता है किसी मुल्क के लिए फूल खरतनाक है या बम- बारूद? युवाओं के हाथ में गुलाब सही है या असलाह? मुझे नहीं पता उनकी यह सोच इस्लामिक है या पाकिस्तानी! पर जो भी हो यह तय है कि यह सोच आने वाले भविष्य में पाकिस्तान को बर्बाद जरुर कर देगी।

सन् 1947 से दुनिया के नक्शे पर आया एक देश पाकिस्तान शायद शुरू से ही यथार्थ को भूल कल्पनाओं में जी रहा है। वह मजहब के रास्ते दुनिया को फतेह करने के रोग से शिकार दिखाई देता है। जिसका सबसे बड़ा सबूत यह कि आज भारत और अफगानिस्तान के अलावा पूरी दुनिया में आतंकवाद कहीं भी हो, उसमें पाकिस्तान के निशान जरुर दिखाई देते हैं। चाहे अमेरिका के सैनबर्नार्डिनो में तश्फीन मलिक का हाथ हो या कंधार और भारत में कोई हमला। सबमें अमूमन पाकिस्तान का ही हाथ होता है। शायद इस्लामाबाद हाफिज सईद और अजहर मसूद के जरिये जिन्ना के पाकिस्तान का नक्शा बड़ा करना चाहता है। यदि यह उनकी प्रामाणिक सोच है तो इस्लामाबाद की किस्मत में अभी काफी खून देखना बाकी है। हाल ही में हफ्ते भर के भीतर वहां एक के बाद एक कई आतंकी हमले हो चुके हैं और इन घटनाओं के निशाने पर सेना के जवान, पुलिसकर्मी, जज, पत्रकार और स्त्रियों व बच्चों समेत सभी तबकों के लोग रहे हैं। एक हफ्ते में करीब 100 से 200 लोग मारे गये। शायद भौगोलिक दृष्टि से भी इन वारदातों का दायरा व्यापक है इन सब वारदातों से पाकिस्तान अपने क्षेत्रफल से ज्यादा स्थान विश्व के अखबारों के पन्नों में पा गया।

पिछले एक सप्ताह से पाकिस्तानी अवाम और मीडिया इस बात को लेकर मुखर है कि दुनिया को पाकिस्तान का दर्द समझना चाहिए कि वह किस तरह आतंक से पीड़ित है। बिल्कुल मानवता के नाते यह समझना भी चाहिए लेकिन सवाल यह कि आतंकी अजहर मसूद को बचाने के लिए चीन से वीटो कराने वाला पाकिस्तान क्या किसी का दर्द समझता है? सब जानते हैं इस्लामाबाद ने आतंक को दो हिस्सों में विभक्त किया है जिसे वह अच्छा और बुरा तालिबान कहता है। उनकी नजर में भारत में मुम्बई अटैक होता है तो अच्छा तालिबान पर जब पेशावर में 150 बच्चें या शहबाज कलंदर दरगाह शाह की दरगाह पर 100 लोग मरते है तो बुरा तालिबान। उड़ी हमला कर 19 भारतीय जवानों की हत्या करने वाले अच्छे तालिबानी लेकिन क्वेटा में पुलिस ट्रेनिंग सेंटर पर हमला कर 61 जवानों को मारने वाले बुरे तालिबानी होते हैं।

शहबाज कलंदर दरगाह शाह पर हमले के 24 घंटे बाद ही पाकिस्तान की आर्मी ने 50 से 100 के बीच आतंकियों को मार गिराने का दावा किया है। फिलहाल अफगानिस्तान से लगी सीमा भी सील कर दी गई है पर सवाल है कि इतने कम समय में, सेना ने इतनी ज्यादा जगहों पर मुठभेड़ कैसे की? क्या उसे वे सारे ठिकाने पता थे और सब कुछ जानते हुए भी खामोशी बरती जा रही थी? इन सवालों से भी पाकिस्तान अपने घर में ही घिरता नजर आ रहा है। इतिहास के कुछ पन्ने कहते है कि जिन्ना ने मुसलमानों की बेहतरी के लिए अलग पाकिस्तान की मांग की थी लेकिन थोड़े समय के बाद जिन्ना का पाकिस्तान मजहबी तंजीमों, उलेमाओं, मौलवियों और आतंकियों का पाकिस्तान बनकर रह गया और बने भी क्यों न? क्योंकि जिस देश का प्रधानमंत्री एक आतंकी बुरहान वानी को युवाओं का रोल माडल उनका आदर्श बताने से गुरेज नहीं करता तो उस मुल्क के युवा बुरहान वानी ही बनेंगे न कि अब्दुल कलाम। जहाँ सरकारी स्तर पर आतंकियों को महिमा मंडित किया जाता हो और भौतिक विज्ञानी नोबेल प्राइज विजेता प्रोफेसर अब्दुससलाम जैसे लोगों का का अपमान तो सब आसानी से सोच सकते है कि वहां युवा क्या बनेंगे?

पाकिस्तान वैश्विक मंच पर खुद को आतंक से पीड़ित देश होने का रोना रोता है। ताजा हमले से भी जाहिर होता है कि यह तथ्य अपनी जगह सही भी है। लेकिन जब काबुल या दिल्ली से आतंक से निपटने की बात की बात दोहराई जाती है तो पाकिस्तान का दोहरा चरित्र देखने को मिलता है। बलूचिस्तान, पश्चिमी वजीरिस्तान आदि में पाक आर्मी आप्रेशन जर्बे अज्ब चलाकर हवाई हमले करती है तो उसे आतंक का खात्मा आतंक के खिलाफ पाक मुहीम बताया जाता है लेकिन जब कश्मीर में भारत की फौज पर उसके पाले सांप जहर उगलते है तो इस्लामाबाद की तरफ से उन्हें आजादी के परवाने कहकर हौसला अफजाई होती है।

शायद अब इस्लामबाद को समझना चाहिए मजहबी आतंक किसी मुल्क के लिए लाभ का सौदा नहीं होता। इसके उदाहरण के लिए उसे मिडिल ईस्ट की तरफ देखना होगा। मजहबी तंजीमो के कारण ही आज सीरिया, सूडान, इराक तबाह हुए तो सोमालिया, नाइजीरिया आदि देश भुखमरी की जिन्दगी जीने को विवश हैं। इस्लामाबाद को अजहर मसूद, हाफिज सईद, सयैद सलाहुदीन जैसे मानवता के खून के प्यासे दरिंदों से बचना होगा। आतंक के भेद में गुड- बेड तालिबान के फेर से बाहर आना होगा। अपना दर्द किसी को समझाने से पहले दिल्ली और काबुल का दर्द भी समझना होगा। इसके बाद ही लोग पाकिस्तान का दर्द समझ पाएंगे।

-राजीव चौधरी

बोध कथा

स्वर में मिठास का रहस्य

अकबर के दरबार में एक गवैया था- तानसेन। कहते हैं, जब वह मल्हार गाता तो वर्षा होने लगती। जब वह दीपक राग गाना आरम्भ करता, तो दीये जल जाते।

एक दिन अकबर ने कहा- 'तानसेन! यह सब-कुछ तुमने जिससे सीखा है, उसका गाना हमें भी सुनवाओ।''

तानसेन ने कहा-''बादशाह! मेरे गुरु स्वामी हरिदास हैं। आपके दरबार में वे नहीं आयेंगे। मेरी तरह उन्हें आपसे कुछ लेना नहीं है। वे जंगल में रहते हैं, पत्तों की झोंपड़ी बनाकर। वहीं कहीं मौज आ जाय तो अपना दुतारा लेकर गाने लगते हैं। किसी के लिए वे गाते नहीं।''

अकबर ने कहा-''वह नहीं आ सकते, तो चलो हम उनके पास चलें। एक बार उनके दर्शन तो कर लें!''

बादशाह को साथ लेकर तानसेन उस जंगल में गये, जहाँ हरिदास स्वामी रहते थे। देखा-हरिदास कुटिया के बाहर ध्यान में मग्न हुए बैठे हैं, चुपचाप शान्त। एक दुतारा उनके पास पड़ा है, परन्तु वह भी बे-आवाज़।

बादशाह ने धीरे से कहा-''तानसेन, यहाँ आकर भी क्या हम प्यासे जायेंगे? क्या कोई ऐसा उपाय नहीं कि स्वामी हरिदास जी गाने लगें?''

तानसेन ने कहा-''प्रयत्न करता हूँ शाहंशाह! आप चुपचाप खड़े रहिये।''

और अपनी सितार उठाकर उसको बजाना शुरू कर दिया। थोड़ा ठीक बजाया, फिर जान-बूझकर ग़लत बजाने लगा। हरिदास ने सुना तो झुँझला उठे; बोले-''ग़लत बजाते हो तानसेन, सुनो!'' और अपना दुतारा उठाकर वह बजाने लगे। उसके साथ-साथ गाने लगे। जंगल का आकाश गूँज उठा। वृक्ष और पौधे झूम उठे। जंगल के हिरण स्वामी हरिदास के पास आकर खड़े हो गये। वहाँ के पक्षी शान्त हो गये। ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे चलती हुई हवा भी ठहर गई है।

बादशाह भी मस्त हो गये। कितनी देर हो गई, यह भी उन्हें पता नहीं लगा। अन्ततः जब हरिदास ने गाना बन्द किया तो बादशाह और तानसेन प्रणाम करके वापस आ गये। रास्ते-भर बादशाह बोल नहीं सके। मधुर संगीत की ध्वनि अभी तक उनके कानों में गूँज रही थी, उनकी आत्मा में गूँज रही थी। रात्रि के समय बादशाह ने तानसेन से कहा-''तुम अच्छा गाते हो, भारतवर्ष के सबसे बड़े गायक हो। फिर भी तुम्हारे गाने में वह रस क्यों नहीं, वह मस्ती क्यों नहीं, जो स्वामी हरिदास के गाने में है?''

तानसेन ने हाथ जोड़कर कहा-''बादशाह, मुझमें और हरिदास में बहुत अन्तर है। मैं हूँ एक शाही गवैया, और अपने बादशाह के लिए गाता हूँ। स्वामी हरिदास जगत्पति के गायक हैं; वह उसके लिए गाते हैं, जो करोड़ों बादशाहों को उत्पन्न और नष्ट कर देता है। जितना गुड़ हो उतना ही मीठा होता है। वे बड़े दरबार के गायक हैं, मैं छोटे दरबार का गायक हूँ।''

अकबर ने सुना, सोचा और चुप हो गया। धीरे-धीरे उसने अपने मन में कहा-'जो भगवान् के गुण गाता है, उसकी वाणी में रस होगा ही।'

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वज मुसलमान कैसे बने?

किरण रिजिजू के बयान के सेक्युलर लोग राजनीतिक निष्कर्ष निकालने पर लगे हुए है। मगर सत्य इतिहास चाहे कड़वा हो उसे कोई बदल नहीं सकता। पिछले 1200 वर्षों से इस्लामिक आक्रांताओं एवं ईसाई मिशनरी से भयानक अत्याचारों की ऐसे दास्तानें भारतीय जनमानस के हृदय पटल पर लिखी हैं। जिन्हें कोई मिटा नहीं सकता। इस लेख को पढ़कर जानिए कैसे भारतीय मुसल्मानों के हिन्दू पूर्वज मुसलमान कैसे बने?

इस तथ्य को सभी स्वीकार करते हैं कि लगभग 99 प्रतिशत भारतीय मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू थे। वह स्वधर्म को छोड़ कर कैसे मुसलमान हो गये?अधिकांश हिन्दू मानते हैं कि उनको तलवार की नोक पर मुसलमान बनाया गया अर्थात् वे स्वेच्छा से मुसलमान नहीं बने। मुसलमान इसका प्रतिवाद करते हैं। उनका कहना है कि इस्लाम का तो अर्थ ही शांति का धर्म है। बलात् धर्म परिवर्तन की अनुमति नहीं है। यदि किसी ने ऐसा किया अथवा करता है तो यह इस्लाम की आत्मा के विरुद्ध निन्दनीय कृत्य है। अधिकांश हिन्दू मुसलमान इस कारण बने कि उन्हें अपने दम घुटाऊ धर्म की तुलना में समानता का सन्देश देने वाला इस्लाम उत्तम लगा।

इस लेख में हम इस्लमिक आक्रान्ताओं के अत्याचारों को सप्रमाण देकर यह सिद्ध करेंगे की भारतीय मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू थे एवं उनके पूर्वजों पर इस्लामिक आक्रान्ताओं ने अनेक अत्याचार कर उन्हें जबरन धर्म परिवर्तन के लिए विवश किया था। अनेक मुसलमान भाइयों का यह कहना है कि भारतीय इतिहास मूलत: अंग्रेजों द्वारा रचित हैं। इसलिए निष्पक्ष नहीं है। यह असत्य है। क्यूंकि अधिकांश मुस्लिम इतिहासकार आक्रमणकारियों अथवा सुल्तानों के वेतन भोगी थे। उन्होंने अपने आका की अच्छाइयों को बढ़ा-चढ़ाकर लिखना एवं बुराइयों को छुपाकर उन्होंने अपनी स्वामि भक्ति का भरपूर परिचय दिया है। तथापि इस शंका के निवारण के लिए हम अधिकाधिक मुस्लिम इतिहासकारों के आधार पर रचित अंग्रेज लेखक ईलियट एण्ड डाउसन द्वारा संगृहीत एवं प्रामाणिक समझी जाने वाली पुस्तकों का इस लेख में प्रयोग करेंगे।

भारत पर 7वीं शताब्दी में मुहम्मद बिन कासिम से लेकर 18वीं शताब्दी में अहमद शाह अब्दाली तक करीब 1200 वर्षों में अनेक आक्रमणकारियों ने हिन्दुओं पर अनगिनत अत्याचार किये। धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक रूप से असंगठित होते हुए भी हिन्दू समाज ने मतान्ध अत्याचारियों का भरपूर प्रतिकार किया। सिंध के राजा दाहिर और उनके बलिदानी परिवार से लेकर वीर मराठा पानीपत के मैदान तक अब्दाली से टकराते रहे। आक्रमणकारियों का मार्ग कभी भी निष्कंटक नहीं रहा अन्यथा सम्पूर्ण भारत कभी का दारुल इस्लाम (इस्लामिक भूमि) बन गया होता। आरम्भ के आक्रमणकारी यहाँ आते, मारकाट-लूटपाट करते और वापस चले जाते। बाद की शताब्दियों में उन्होंने न केवल भारत को अपना घर बना लिया अपितु राजसत्ता भी ग्रहण कर ली।

इस लेख में हम कुछ आक्रमणकारियों जैसे मौहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनवी, मौहम्मद गौरी और तैमूर के अत्याचारों की चर्चा करेंगे।

मौहम्मद बिन कासिम : भारत पर आक्रमण कर सिंध प्रान्त में अधिकार प्रथम बार मुहम्मद बिन कासिम को मिला था। उसके अत्याचारों से सिंध की धरती लहूलुहान हो उठी थी। कासिम से उसके अत्याचारों का बदला राजा दाहिर की दोनों पुत्रियों ने कूटनीति से लिया था।

1. प्रारंभिक विजय के पश्चात् कासिम ने ईराक के गवर्नर हज्जाज को अपने पत्र में लिखा-'दाहिर का भतीजा, उसके योद्धा और मुख्य-मुख्य अधिकारी कत्ल कर दिये गये हैं। हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित कर लिया गया है, अन्यथा कत्ल कर दिया गया है। मूर्ति-मंदिरों के स्थान पर मस्जिदें खड़ी कर दी गई हैं। अजान दी जाती है।'

2. वहीं मुस्लिम इतिहासकार आगे लिखता है- 'मौहम्मद बिन कासिम ने रिवाड़ी का दुर्ग विजय कर लिया। वह वहाँ दो-तीन दिन ठहरा। दुर्ग में मौजूद 6000 हिन्दू योद्धा वध कर दिये गये, उनकी पत्नियाँ, बच्चे, नौकर-चाकर सब कैद कर लिये (दास बना लिये गये)। यह संख्या लगभग 30 हजार थी। इनमें दाहिर की भानजी समेत 30 अधिकारियों की पुत्रियाँ भी थीं।

महमूद गजनवी : मुहम्मद गजनी का नाम भारत के अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वी राज चौहान को युद्ध में हराने और बंदी बनाकर अफगानिस्तान लेकर जाने के लिए प्रसिद्द है। गजनी मजहबी उन्माद एवं मतान्धता का जीता जागता प्रतीक था।

1. भारत पर आक्रमण प्रारम्भ करने से पहले इस 20 वर्षीय सुल्तान ने यह ध ार्मिक शपथ ली कि वह प्रति वर्ष भारत पर आक्रमण करता रहेगा, जब तक कि वह देश मूर्ति और बहुदेवता पूजा से मुक्त होकर इस्लाम स्वीकार न कर ले। अल उतबी इस सुल्तान की भारत विजय के विषय में लिखता है-'अपने सैनिकों को शस्त्रास्त्र बाँट कर अल्लाह से मार्ग दर्शन और शक्ति की आस लगाये सुल्तान ने भारत की ओर प्रस्थान किया। पुरुषपुर (पेशावर) पहुँचकर उसने उस नगर के बाहर अपने डेरे गाड़ दिये।

2. मुसलमानों को अल्लाह के शत्रु काफिरों से बदला लेते दोपहर हो गयी। इसमें 15000 काफिर मारे गये और पृथ्वी पर दरी की भाँति बिछ गये जहाँ वह जंगली पशुओं और पक्षियों का भोजन बन गये। जयपाल के गले से जो हार मिला उसका मूल्य 2 लाख दीनार था। उसके दूसरे रिद्गतेदारों और युद्ध में मारे गये लोगों की तलाशी से 4 लाख दीनार का धन मिला। इसके अतिरिक्त अल्लाह ने अपने मित्रों को 5 लाख सुन्दर गुलाम स्त्रियाँ और पुरुष भी बखशे।

3. कहा जाता है कि पेशावर के पास वाये-हिन्द पर आक्रमण के समय महमूद ने महाराज जयपाल और उसके 15 मुख्य सरदारों और रिश्तेदारों को गिरफ्तार कर लिया था। सुखपाल की भाँति इनमें से कुछ मृत्यु के भय से मुसलमान हो गये। भेरा में, सिवाय उनके, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया, सभी निवासी कत्ल कर दिये गये। स्पष्ट है कि इस प्रकार धर्म परिवर्तन करने वालों की संख्या काफी रही होगी।

4. मुल्तान में बड़ी संख्या में लोग मुसलमान हो गये। जब महमूद ने नवासा शाह पर (सुखपाल का धर्मान्तरण के बाद का नाम) आक्रमण किया तो उतवी के अनुसार महमूद द्वारा धर्मान्तरण का अभूतपूर्व प्रदर्शन हुआ। काश्मीर घाटी में भी बहुत से काफिरों को मुसलमान बनाया गया और उस देश में इस्लाम फैलाकर वह गजनी लौट गया।

5. उतबी के अनुसार जहाँ भी महमूद जाता था, वहीं वह निवासियों को इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर करता था। इस बलात् धर्म परिवर्तन अथवा मृत्यु का चारों ओर इतना आतंक व्याप्त हो गया था कि अनेक शासक बिना युद्ध किये ही उसके आने का समाचार सुनकर भाग खड़े होते थे। भीमपाल द्वारा चाँद राय को भागने की सलाह देने का यही कारण था कि कहीं राय महमूद के हाथ पड़कर बलात् मुसलमान न बना लिया जाये जैसाकि भीमपाल के चाचा और दूसरे रिश्तेदारों के साथ हुआ था।

6. 1023 ई. में किरात, नूर, लौहकोट और लाहौर पर हुए चौदहवें आक्रमण के समय किरात के शासक ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और उसकी देखा-देखी दूसरे बहुत से लोग मुसलमान हो गये। निजामुद्ध्दीन के अनुसार देश के इस भाग में इस्लाम शांतिपूर्वक भी फैल रहा था, और बलपूर्वक भी। सुल्तान महमूद कुरान का विद्वान था और उसकी उत्तम परिभाषा कर लेता था। इसलिये यह कहना कि उसका कोई कार्य इस्लाम विरुद्ध था, झूठा है।

7. हिन्दुओं ने इस पराजय को राष्ट्रीय चुनौती के रूप में लिया। अगले आक्रमण के समय जयपाल के पुत्र आनंद पाल ने उज्जैन, ग्वालियर, कन्नौज, दिल्ली और अजमेर के राजाओं की सहायता से एक बड़ी सेना लेकर महमूद का सामना किया। फरिश्ता लिखता है कि 30,000 खोकर राजपूतों ने जो नंगे पैरों और नंगे सिर लड़ते थे, सुल्तान की सेना में घुस कर थोड़े से समय में ही तीन-चार हजार मुसलमानों को काट कर रख दिया। सुल्तान युद्ध बंद कर वापस जाने की सोच ही रहा था कि आनंद पाल का हाथी अपने ऊपर नेपथा के अग्नि गोले के गिरने से भाग खड़ा हुआ। हिन्दू सेना भी उसके पीछे भाग खड़ी हुई।

8. सराय (नारदीन) का विध्वंस- सुल्तान ने (कुछ समय ठहरकर) फिर हिन्द पर आक्रमण करने का इरादा किया। अपनी घुड़सवार सेना को लेकर वह हिन्द के मध्य तक पहुँच गया। वहाँ उसने ऐसे-ऐसे शासकों को पराजित किया जिन्होंने आज तक किसी अन्य व्यक्ति के आदेशों का पालन करना नहीं सीखा था। सुल्तान ने उनकी मूर्तियाँ तोड़ डालीं और उन दुष्टों को तलवार के घाट उतार दिया। उसने इन शासकों के नेता से युद्ध कर उन्हें पराजित किया। अल्लाह के मित्रों ने प्रत्येक पहाड़ी और वादी को काफिरों के खून से

- डॉ. विवेक आर्य

रंग दिया और अल्लाह ने उनको घोड़े, हाथियों और बड़ी भारी संपत्ति मिली।

9. नंदना की विजय के पश्चात् सुल्तान लूट का भारी सामान ढ़ोती अपनी सेना के पीछे-पीछे चलता हुआ, वापस लौटा। गुलाम तो इतने थे कि गजनी की गुलाम-मंडी में उनके भाव बहुत गिर गये। अपने (भारत) देश में अति प्रतिष्ठा प्राप्त लोग साधारण दुकानदारों के गुलाम होकर पतित हो गये। किन्तु यह तो अल्लाह की महानता है कि जो अपने महजब को प्रतिष्ठित करता है और मूर्ति-पूजा को अपमानित करता है।

10. थानेसर में कत्ले आम- थानेसर का शासक मूर्ति-पूजा में घोर विश्वास करता था और अल्लाह (इस्लाम) को स्वीकार करने को किसी प्रकार भी तैयार नहीं था। सुल्तान ने (उसके राज्य से) मूर्ति पूजा को समाप्त करने के लिये अपने बहादुर सैनिकों के साथ कूच किया। काफिरों के खून से, नदी लाल हो गई और उसका पानी पीने योग्य नहीं रहा। यदि सूर्य न डूब गया होता तो और अधिक शत्रु मारे जाते। अल्लाह की कृपा से विजय प्राप्त हुई जिसने इस्लाम को सदैव-सदैव के लिये सभी दूसरे मत-मतान्तरों से श्रेष्ठ स्थापित किया है, भले ही मूर्ति पूजक उसके विरुद्ध कितना ही विद्रोह क्यों न करें। सुल्तान, इतना लूट का माल लेकर लौटा जिसका कि हिसाब लगाना असंभव है। स्तुति अल्लाह की जो सारे जगत का रक्षक है कि वह इस्लाम और मुसलमानों को इतना सम्मान बख्शाता है।

11. अस्नी पर आक्रमण- जब चन्देल को सुल्तान के आक्रमण का समाचार मिला तो डर के मारे उसके प्राण सूख गये। उसके सामने साक्षात् मृत्यु मुँह बाये खड़ी थी। सिवाय भागने के उसके पास दूसरा विकल्प नहीं था। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसके पाँच दुर्गों की बुनियाद तक खोद डाली जाये। वहाँ के निवासियों को उनके मलबे में दबा दिया अथवा गुलाम बना लिया गया। चन्देल के भाग जाने के कारण सुल्तान ने निराश होकर अपनी सेना को चांद राय पर आक्रमण करने का आदेश दिया जो हिन्द के महान शासकों में से एक है और सरसावा दुर्ग में निवास करता है।

12. सरसावा (सहारनपुर) में भयानक रक्तपात- सुल्तान ने अपने अत्यंत धार्मिक सैनिकों को इकट्ठा किया और द्गात्रु पर तुरन्त आक्रमण करने के आदेश दिये। फलस्वरूप बड़ी संख्या में हिन्दू मारे गये अथवा बंदी बना लिये गये। मुसलमानों ने लूट की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जब तक कि कत्ल करते-करते उनका मन नहीं भर गया। उसके बाद ही उन्होंने मुर्दों की तलाशी लेनी प्रारम्भ की जो तीन दिन तक चली। लूट में सोना, चाँदी, माणिक, सच्चे मोती जो हाथ आये जिनका मूल्य लगभग तीस लाख दिरहम रहा होगा। गुलामों की संख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रत्येक को 2 से लेकर 10 दिरहम तक में बेचा

- शेष पृष्ठ 8 पर

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव (शिवरात्रि) पर विशेष

ऋषि दयानन्द का भक्तिवाद

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

....गहराई से देखें तो पता चलता है कि दयानन्द का गृहत्याग और सन्यास ग्रहण जिस विशिष्ट लक्ष्य को ध्यान में रखकर हुआ था, उसके पीछे अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त करने की उनकी तीव्र ललक ही थी। शिवरात्रि-प्रसंग से उन्होंने सीखा कि निखिल विश्व ब्रह्माण्ड का नियंत्रण करने वाली सत्ता जड़ नहीं हो सकती। वह कल्याणकारी शिव कौन है तथा कैसा है जिसकी वंदना वेदों में अनेकत्र मिलती है।? अपने घर में घटित हुए मृत्यु-प्रसंगों ने उन्हें जिन्दगी और मौत के रहस्य को जानने की प्रेरणा दी। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने अपने योग गुरुओं से उस 'राजयोग' का प्रशिक्षण प्राप्त किया जो समाधि सिद्धिपूर्वक परमात्मा का साक्षात्कार कराता है।...

ऋषि दयानन्द के धार्मिक तथा सामाजिक सुधार के कार्य में अधिक सक्रिय रहने तथा उनके राष्ट्रीय जागरण के प्रथम पुरोधा होने के कारण अनेक लोगों में यही धारणा बन गई है कि भारत की आध्यात्मिक चेतना को जगाने तथा भगवद् भक्ति के प्रसार में उनका योगदान अल्प है। ऐसा विचार उन लोगों का है जिन्होंने दयानन्द का सूक्ष्म अध्ययन नहीं किया। गहराई से देखें तो पता चलता है कि दयानन्द का गृहत्याग और संन्यास ग्रहण जिस विशिष्ट लक्ष्य को ध्यान में रखकर हुआ था, उसके पीछे अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त करने की उनकी तीव्र ललक ही थी। शिवरात्रि-प्रसंग से उन्होंने सीखा कि निखिल विश्व ब्रह्माण्ड का नियंत्रण करने वाली सत्ता जड़ नहीं हो सकती। वह कल्याणकारी शिव कौन है तथा कैसा है जिसकी वंदना वेदों में अनेकत्र मिलती है। अपने घर में घटित हुए मृत्यु-प्रसंगों ने उन्हें जिन्दगी और मौत के रहस्य को जानने की प्रेरणा दी। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने अपने योग गुरुओं से उस 'राजयोग' का प्रशिक्षण प्राप्त किया जो समाधि सिद्धिपूर्वक परमात्मा का साक्षात्कार कराता है। भावी जीवन में परम देव परमात्मा के प्रति उनका प्रणत भाव सदा रहा। अपने महान् कार्यों की पूर्ति में उन्होंने परमात्म देव की सहायता की याचना की और आजीवन एक आस्तिक भक्त का जीवन बिताकर अपने आराध्य के प्रति 'स्वयं' को अर्पण कर दिया। स्वामीजी की धारणा थी कि धर्म, समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने का जो महद् अभियान उन्होंने चलाया है उसमें परमात्मा की प्रेरणा तथा सहायता ही सर्वोपरि रही है। वे परमात्मा के अनन्य उपासक थे। समर्पण भाव को लेकर जगन्नाथ के सूत्रधार के सम्मुख आने वाले वे एक ऐसे विनम्र सेवक थे जिन्होंने अत्यन्त भाव प्रवण होकर अपने आराध्य देव से कहा था-'आपका तो स्वभाव ही है कि अंगीकृत को कभी नहीं छोड़ते।' शास्त्रार्थ समर में उतरने से पहले दयानन्द दीर्घकाल तक परमात्मा की उपासना करते थे, मानो अपने आराध्य से सत्य पक्ष की विजय दिलाने की प्रार्थना करते हों। लोकहित के अपने सभी कार्यों और अनुष्ठानों में वे परमात्मा को अपना परम सहायक मानते थे।

छः दर्शन शास्त्रों की तर्ज़ पर कालान्तर में नारद और शाण्डिल्य के नाम से भक्ति सूत्र रचे गए। इनमें सूत्र शैली में भक्ति तथा उसके आनुषंगिक प्रसंगों की विस्तृत मीमांसा प्रस्तुत की गई है। आचार्य शाण्डिल्य ने भक्ति को इस प्रकार परिभाषित किया है - या परा अनुरक्तिः ईश्वरे सा भक्तिः। अर्थात् परमात्मा के प्रति पराकोटि की अनुरक्ति (प्रेम) ही भक्ति है। इन ग्रन्थों में नवधा भक्ति का जो उल्लेख मिलता है उसे अनुमान होता है कि भक्ति सूत्रों की रचना उस युग में हुई थी जब पौराणिक मत का प्रचलन हो चुका था तथा जनता में प्रतिमा-पूजन, अवतारवाद आदि की धारणाएं चल पड़ी थीं। इन ग्रन्थों मे ब्रज गोपिकाओं आदि के सन्दर्भ दिये गए हैं, वे इन्हें पुराणों के परवर्ती काल का होना बताते हैं।

ऋषि दयानन्द ने परमात्मा की भक्ति की और व्यक्ति का मनोनिवेश करने वाला एक ग्रन्थ लिखा था -आर्याभिविनय'। उनका विचार था चारों वेद संहिताओं में प्रत्येक से न्यून से न्यून पचास मंत्रों को लेकर उनकी भगवद्भक्ति से ओतप्रेत भावपूर्ण व्याख्या की जाये। इस ग्रंथ के प्रथम तथा द्वितीय प्रकाश (ऋग्वेद के 53 तथा यजुर्वेद के 55 मंत्र युक्त) लिखे गए तथा छपे। अवशिष्ठ साम तथा अथर्ववेद के विनय प्रधान मंत्रों की परमात्मा की स्तुति है या प्रार्थना, इसका संकेत वे मन्त्रारम्भ में कर देते हैं। ग्रन्थारम्भ के स्वरचित श्लोकों में दयानन्द ने परमात्मा की भावपूर्ण स्तुति की है-

सर्वात्मा सच्चिदानन्दोऽनन्तो यो न्यायकृच्छुचिः। भूयात्तमां सहायो नो दयालुः सर्वशक्तिमान्।

अर्थात् जो परमात्मा सबका आत्मा, सत्, चित्, आनन्दस्वरूप, अनन्त, अज, न्याय करने वाला, निर्मल, सदा पवित्र, दयालु सब सामर्थ्य वाला, हमारा इष्टदेव है, वह हमको सहाय नित्य होवे।

साथ ही इन श्लोकों में वे यह संकेत देते हैं कि समस्त लोगों के हित तथा परमात्मा के ज्ञान के लिए वे मूल मंत्रों के साथ-साथ उनका लोक-भाषा में व्याख्यान जन साधारण को बोध कराने के लिए दे रहे हैं। दयानन्द की सम्मति में जो ब्रह्म विमल, सुखकारक, पूर्णकाम, तृप्त, जगत् में व्याप्त है वही वेदों से प्राप्य है। जिसके मन में इस ब्रह्म की प्रकटता (यथार्थ ज्ञान) है, वही मनुष्य ईश्वर के आनन्द का भागी है और वही सदैव सबसे अधिक सुखी है। ऐसे मनुष्य को धन्य मानना चाहिए। इन प्रास्ताविक श्लोकों से हमें दयानन्द के भक्तिवाद को समझने में सहायता मिलती है।

आर्याभिविनयम् की रचना केवल ईश्वर-भक्ति में लोगों को नियोजन करनेके लिए ही की गई हो, ऐसी बात नहीं है। दयानन्द मध्यकाल के अनेक भक्तों की भांति लोगों को भाग्यवाद तथा पुरुषार्थहीनता का पाठ पढ़ाने वाले नहीं थे। वे आर्य जनों में पुरुषार्थ स्वदेश प्रेम तथा स्वातन्त्रय लिप्सा के भावों को देखने के इच्छुक थे। यही कारण है कि आर्याभिविनय में एक और प्रभुभक्ति तथा अपने आराध्य के प्रति समर्पण की भावना दिखाई पड़ती है तो साथ ही उस 'राजाधिराज परमात्मा' से स्वराज्य तथा आर्यो (सत्पुरुषों) के अखण्ड चक्रवर्ती साम्राज्य की याचना भी की गई है। परमात्मा के प्रति दयानन्द की अनन्य प्रीति को देखना चाहे तों इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम व्याख्यात ऋग्वेद के मन्त्र 'शं नो मित्रःशं वरुणः' की व्याख्या के आरम्भ में परमात्मा के प्रति किये गए सम्बोधनों की छटा को देखें। यहां न्यूनातिन्यून 27 सम्बोधनों से दयानन्द ने अपने आराध्य परमात्म-देव को सम्बोधित किया है। इनमें से अनेक सम्बोधनों में अनुप्रास प्रधान शब्दों का सौन्दर्य दर्शनीय है। यथा-विश्वविनोदक, विनयविधीप्रद, विश्वासविलासक तथा निर्मल, निर्सह, निरामय, निरुप्रदव आदि। एक ओर यदि परमात्मा को 'सज्जन सुखद' कहा तो साथ हीउसे 'दुष्ट सुताड़न' कहना भी वे नहीं भूले। दयानन्द की दृष्टि में परमात्मा चतुर्विध पुरुषार्थ के प्रदाता हैं-वे यदि धर्म सुप्रापक हैं तो अर्थ-सुधारक तथा सुकामवर्द्धक भी हैं। मोक्षप्रदाता तो वो हैं ही-यदि वे 'राज्य विधायक' हैं तो 'शत्रु विनाशक' भी हैं। वस्तुतः इस ग्रन्थ को लिखकर दयानन्द ने भारत के भक्तिसिद्धान्तों में एक नूतन क्रांति की थी, अतः दयानन्द के भक्तिवाद का तात्त्विक अध्ययन अपेक्षित है।

इस ग्रन्थ के अन्य मंत्रों के व्याख्यानों में उन्होंने परमात्मा के लिए जो सम्बोधन सूचक शब्द लिखे हैं, वे भी व्यंजनापूर्ण हैं। जब वे परमात्मा को 'महाराजाधिराज परमेश्वर' कहकर सम्बोधित करते हैं तो उनकी प्रार्थना होती है-'हमको साम्राज्याधिकारी सद्यः कीजिए।' उनकी विनय है कि हम सुनीतियुक्त हों जिससे कि हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े। (प्रार्थना सं. 17) 'वयं' जयेम त्वया युजा' (ऋ. 1/102/4) मन्त्र की व्याख्या के आरम्भ में उन्होंने परमात्मा को 'महाधनेश्वर' (मघवन्) तथा 'महाराजा धिराजेश्वर)' कहकर पुकारा तथा उनसे चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्य (रूपी) धन को प्राप्त कराने की प्रार्थना की। यह ईश्वरभक्त दयानन्द ही है जो परमात्मा से आर्यो के अखण्ड भी विनय करता है कि 'अन्य देशवासी' राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों। (यजुर्वेद के मंत्र 37/14 'इषे पिन्वस्व ऊर्जे पिन्वस्व' की व्याख्या में) सामान्यतया भक्त अपने आराध्य से सुख, सौभाग्य आरोग्य, धन-धान्य, कीर्ति, ऐश्वर्य आदि की याचना करता है। दयानन्द अपने परमात्मा से देश के लिए स्वराज्य तथा शिष्टजनों (आर्यों) के साम्राज्य की याचना के प्रति जो सम्बोधन शब्द प्रयोग किये हैं वे भी विशिष्ट अर्थवत्ता लिये हैं। शतक्रतो (अनन्त कार्येश्वर), महाराजाधिराज परमेश्वर, सौख्य-सौख्य-प्रदेश्वर, सर्वविद्यामय आदि। वस्तुतः अनन्त गुणों वाले परमात्मा के सम्बोधन भी अनन्त ही होंगे।

परमात्मा की भक्ति दिखाने की वस्तु नहीं है। मध्यकाल में मूर्तिपूजा, नाम जप, तिलक, कण्ठी-छाप आदि साम्प्रदायिक प्रतीकों के धारण को भक्ति का साधन माना गया था। दयानन्द की सम्मति में परमात्मा के विविध गुणों के वाचक शब्दों के उल्लेखपूर्वक उस परम सत्ता को नमन करना ही उसकी भक्ति का उत्कृष्ट रूप है। यदि हम उनके द्वारा रचित ग्रन्थों के आरम्भ के मंगल सूचक वाक्यों को देखें तो ज्ञात होगा कि स्वामीजी के लिए परमात्मा क्या है और कैसा है? यहां कुछ ऐसे ही ग्रन्थारम्भ में लिखे गये नमस्कार विधायक वाक्य दिये जा रहे हैं जो दयानन्द की दृष्टि में परमात्मा के स्वरूप तथा गुणों के ज्ञापक हैं।

1. ओ३म् सच्चिदानन्देश्वरायम नमः।
-सत्यार्थ प्रकाश
2. ओ३म् तत्सत्परब्रह्माणे नमः।
-आर्याभिविनय
3. ओ३म् ब्रह्मात्मने नमः।
-वर्णोच्चारण शिक्षा
4. ओ३म् खम्ब्रह्मा। -काशी शास्त्रार्थ
5. ओ३म् खम्ब्रह्मा। - सत्यधर्म विचार
6. गोकरुणानिधि में परमात्मा का स्मरण

इस प्रकार किया गया है- 'ओ३म् नमो विश्वम्भराय जगदीश्वराय'। इसमें दयानन्द का भाव यह है कि जो विश्वभर है वही तो गो आदि उपयोगी प्राणियों का भरण-पोषण करने की भी सामर्थ्य रखता है। जो ईश्वर सर्वशक्तिमान् है उसमें गौ आदि की रक्षा करने का भी सामर्थ्य है।

7. ओ३म् नमो निर्भ्रमाय जगदीश्वराय। -अनुभ्रमोच्छेदन

वेद के निर्भ्रान्त ज्ञान को देनेवाला परमात्मा स्वयं निर्भ्रम है। ऐसे सार्थक नमस्कार वाक्य लेखक की परमात्मा के प्रति सच्ची भक्ति दर्शाते हैं।

- जोधपुर (राज.)

प्रथम पृष्ठ का शेष

महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउण्डेशन, कोझिकोड (केरल) के नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन एवं दक्षिण भारतीय वैदिक सम्मेलन में पहुंचने वाले महानुभावों के लिए यात्रा सम्बन्धी जानकारी

1 मंगला लक्ष्यद्वीप एक्सप्रैस

निजामुद्दीन से प्रतिदिन प्रातः 9:15 पर चलती है और फरीदाबाद, मथुरा, आगरा, मुरैना, ग्वालियर, झांसी, इटारसी, खण्डवा, भुसावल, मनमाड, नासिक रोड आदि स्टेशन से गाड़ी ली जा सकती है। लगभग 44 घंटे लगते हैं। कोझीकोड से वापसी सायं 5:00 बजे प्रतिदिन चलती है। दिल्ली से आना-जाना किराया 2 एसी 6860/-, 3एसी 4620/-, स्लीपर 1780/- रुपये (लगभग) है।

2 त्रिवेन्द्रम राजधानी

निजामुद्दीन से यह गाड़ी मंगल, बुध और रविवार को प्रात 10:55 पर चलती है और कोटा, वड़ोदरा, वसई रोड, पनवेल, रत्नागिरी, मडगांव स्टेशन से ली जा सकती है। कालीकट पहुंचने में लगभग 34.5 घंटे का समय लगता है। यह गाड़ी बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार को प्रातः 2 बजे कोझीकोड से मिलती है। दिल्ली से आना-जाना किराया 2एसी 8870/-, 3एसी 6450/-रुपेय (लगभग) है।

3 हवाई जहाज

नई दिल्ली से कालीकट पहुंचने में 5 घंटे तथा मुम्बई से कालीकट पहुंचने में 2 घंटे का समय लगता है।

नई दिल्ली से कालीकट का किराया आना-जाना लगभग 15000 रुपये है, जोकि समयानुसार कम- ज्यादा हो सकता है।

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Seven Characteristics of an Ideal Ruler

The mental and moral fabric of an ideal ruler is portrayed in the 22nd verse of the twelvth chapter of Yajurveda. These are characteristics of ideal rulers which ordinary persons do not possess.

"Liberal in charity, owner of soul power, highly intellectual, provider of comforts, protector of destitutes, son of endurance, radiant among people - the ruler shines enkindled before dawn."

A worthy ruler should not be miserly, coward, foolish, selfish, unkind, intolerant or lustreless. The verse ends with the dictum that a ruler attains efficiency when he gets up before sunrise and keeps himself ready to review the wellbeings of his people. He regulates his life style so that he becomes an ideal on the land. He shines forth between heaven and earth. Richness incarnate, he is the fulfiller of aspirations of all kinds of men and women of the land. A bestower of happinesss, he is benevolent to all his people. His valour is illuminating, fast-moving and overseeing the actions of all persons.

श्रीणामुदारो धरूणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः।
वसुः सूनुः सहसोऽअप्सु राजा विभात्यग्रऽउषसामिधानः।।
(Yv. XII.22)

Srinamudaro dharuno rayinam manisanam prarpanah somagopah.

vasuh sunuh sahaso apsu raja vi bhatyagra usasamidhanah.

Harmony between Worldly and Spiritual Knowledge

"Those who pursue worldly knowladge elone fall in blinding gloom. Those who pursue only spiritual knowledge sink into gloom darker still."

"There is a difference between the fruit of worldly knowledge and that of spiritual knowledge, Thus we have been hearing from the sages who instruct us in these matters".

"But he who pursues the worldly knowledge as well as spiritual knowledge side by side, overcomes death by worldly knowledge and gains immortality through the spiritual one."

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायां रताः।।
अन्यदेवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्यायाः।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।
विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। (Yv. XL.12-14)

Andham tamah pravisanti ye vidyamupasate.

tato bhuya iva te tamo ya u vidyayam ratah..

Anyadevahurvidyaya anyadahuravidyayah.

iti susruma dhiranam ye nastadvicacaksire..

Vidyam cavidyam ca yastadvedobhayam saha.

avidyaya mrtyum tirtva vidyaya mrtamasnute..

The Triumphant Householder

"I will do' is the assertion of a successful householder. The present verse enumerates some of his virtues which bring laurels to him. In the first instance, a house holder should have self-confidence. Loss of belief in one's own self brings his defeat.'

"Seek your potentiality, O householder; utilize the same to build an ideal home and an illustrious society", exhorts the verse. Without attaining soul power, a sound body is really fragile. The second virtue is the beneficial intake into the body through mouth, eyes and ears. Pure food and clean thoughts purify the soul power. Thirdly one should be a courageous fighter of evils inner and outer. He should be sportive, dynamic, ever cheerful and enthusiastic. Lastly he should be an excellent performer of his duties. Such a person is a triumphant house-holder standing apart with rare distinction.

स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च।
क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।।
(Yv. XVII.85)

Svatavansca praghasi ca santapanasca grhamedhi ca.
kridi ca saki cojjesi..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें **संस्कृत पाठ - 22**

अनुवाद = किसी भाषा के शब्दार्थ को दूसरी भाषा में प्रकट करना

गतांक से आगे....

कारक

''गोपाल पुस्तक पढ़ता है''- इस वाक्य में पढ़ने वाला ''गोपाल'' है। पढ़ना क्रिया है, और क्रिया को करने वाला ''कर्ता'' है। वाक्य में पढ़ने का विषय ''पुस्तक'' है, जिसके लिए क्रिया की गई। कर्ता जिसके लिए क्रिया करे, वह ''कर्म'' कहलाता है।

''राजा ने अपने हाथ से ब्राह्मण को दान दिया''- इस वाक्य में दान क्रिया हाथ से हुई, तो हाथ ''कारण'' हुआ। यह क्रिया ब्राह्मण के लिए हुई तो ब्राह्मण ''सम्प्रदान'' हुआ।

''आम के वृक्षों से फल भूमि पर गिरे'' - इस वाक्य में वृक्षों से फल पृथक हुए तो वृक्ष ''अपादान'' हुआ। फल भूमि पर गिरे तो भूमि ''अधिकरण'' हुआ। आम का सम्बन्ध वृक्षों से है तो आम ''सम्बन्ध'' हुआ।

कारक वह शब्द है जिसका उपयोग क्रिया की पूर्ति के लिए किया जाता है। कई बार ''सम्बन्ध'' को कारक नहीं माना जाता है क्योंकि इसका क्रिया से सीधा संबंध नहीं होता, फिर भी यहाँ हम इसे कारण मानेंगे जैसा कि हिंदी में है।

कारकों को जोड़ने के लिए ''ने'', ''को'' जैसे कई चिह्न काम में आते हैं जिन्हें ''विभक्ति (कारण-चिह्न)'' कहते हैं।

अतः संस्कृत में सात विभक्तियाँ और इस एक सम्बोधन निम्नलिखित हैं।

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	ने/से/द्वारा(with)
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए (for)
पंचमी	अपादान	से (from)
षष्ठी	सम्बन्ध	का/के/की (of)
सप्तमी	अधिकरण	में/पर/ऊपर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे/अरे आदि

हिन्दी में ऊपरोक्त चिह्नों को संज्ञा या सर्वनाम के साथ जोड़ा जाता है जबकि संस्कृत में संज्ञा या सर्वनाम का रूप बदल जाता है, जैसे - रामः (राम ने), रामम् (राम को), रामस्य (राम का) आदि।

विभक्तियों सिर्फ कारकों के बारे में ही नहीं बताती, ये अन्य परिस्थितियों में भी प्रयुक्त होती हैं और तब इन्हें ''उपपद विभक्तियाँ'' कहा जाता है।

संस्कृत व्याकरण में शब्दों के ''सुबन्त'' और ''तिङन्त'' रूप का प्रयोग किया जाता है। नाम या सुबन्त शब्द, सात विभक्तियों और तीन वचनों में (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन) कुल 21 रूप (7X3) में हो सकते हैं। ये विभिन्न रूप अलग- अलग प्रत्यय को जोड़कर बनाया जाता है।

नीचे ''सरित्'' (नदी) शब्द का विभिन्न रूप है-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पंचमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

संस्कृत वाक्यों में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जिनका रूप किसी परिस्थिति में नहीं बदलता है। ऐसे शब्द ''अव्यय'' या अविकारी कहलाते हैं। जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन और कारक के आधार पर बदल जाता है, ''विकारी'' कहलाता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया ''विकारी'' होता है।

संस्कृत के वाक्यों में शब्दों का क्रम बदलने पर भी अर्थ पर कोई असर नहीं होता, क्योंकि शब्दों में जुड़े हुए ''सुप्'' या ''तिङ्'' विभक्ति के कारण इनकी पहचान हो जाती है।

१. दमयन्तीं नलः परिणिनाय।
२. नलः दमयन्तीं परिणिनाय।
३. परिणिनाय दमयन्तीं नलः।
४. परिणिनाय नलः दमयन्तीम्।

इन चारों वाक्यों का अर्थ एक ही है - नल ने दमयन्ती से विवाह किया।

- *क्रमशः* -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

भीषण ज्वर में ही पुस्तक लिख डाली

1898 ई. तक सिखों में पृथकता व का प्रविष्ट नहीं हुआ था। यत्न किया जा रहा था कि सिक्खों में पृथक्त्व का विष फैलाया जाए। एक पुस्तक लिखी गई जिसमें सिखों को हिन्दुओं से पृथक् व आर्यसंस्कृति तथा धर्म से सर्वथा न्यारा सिद्ध करने के लिए कुतर्क दिये गये।

इस पुस्तक को एक देशभक्त साहसी विद्वान् ने पढ़ा। वे सज्जन सिख साहित्य के मर्मज्ञ थे। आर्यसिद्धान्तों का उन्हें गहरा ज्ञान था उन्हें उस समय भीषण ज्वर था। उसी अवस्था में खटिया पर पड़े-पड़े आपने प्रतिवाद करने के लिए प्रमाणों से भरपूर एक उत्तम पुस्तक रच दी, जिसका नाम था - **हमारे गुरु साहिबान वेद के पैरोकार थे।**

यह पुस्तक आज देवनागरी में छपे तो कोई एक सौ पृष्ठ की बनेगी। इसका कुछ सार हमने 'यज्ञ योग ज्योति' में वीर भगतसिंह सुखदेव व राजगुरु की बलिदान अर्ध शताब्दी पर दिया था।

आर्य पुरुषो! जानते हो यह पुस्तक किसने लिखी? ये थे श्रीमान् बाबा अर्जुनसिंहजी। आप वीर भगतसिंह के दादाजी थे। आपको ऋषिजी ने स्वयं वैदिक धर्म में दीक्षित किया था। इन विभूतियों के हम सदैव ऋणी रहेंगे।

'याद रहे न रहे पर भूल न जाना।'

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल विद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताएं

1 व 4 फरवरी 2017 को महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल विद्यालय शादी खामपुर द्वारा अपनी वार्षिक गतिनिधियों के अन्तर्गत रंजीत नगर स्थित हरवंस पार्क में खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों ने भी पूरे उत्साह से भाग लिया।

बच्चों की प्रतिभा निखारने एवं आत्मविश्वास बढ़ाने हेतु बेबी शो एवं फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में बच्चों ने पूरे उत्साह से भाग लिया। इसमें उन्होंने पर्यावरण व दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं, हानिकारक वस्तुओं व नेताओं का प्रतिरूप अपनाकर अपने-अपने जीवन के उद्देश्यों का चित्रण किया। इस अवसर पर श्री अरुण प्रकाश वर्मा, डॉ. उमा शशि दुर्गा जी, श्री जगदीश आनन्द जी, राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित श्रीमती किरण, श्रीमती तृप्ता शर्मा, श्रीमती वीणा आर्या एवं निगम पार्षद श्रीमती अर्चना गुप्ता भी उपस्थित रहीं। माता चन्नन देवी अस्पताल से आए ई.एन.टी विशेषज्ञों द्वारा बेबी शो में भाग लेने वाले बच्चों का मैडिकल चैकअप भी करवाया गया व डॉक्टर द्वारा उनके अभिभावकों को परामर्श भी दिया गया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र व उपहार दिए गए। - ***प्रधानाचार्य***

87वां नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर

स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य संस्थापक अध्यक्ष, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर की 10वीं पुण्यतिथि एवं श्रीमती शारदा देवी आर्य की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के तत्त्वाधान में 23 व 26 फरवरी 2017 को 87वां नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर का आयोजन स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल, अलवर में प्रात: 10 से 12.30 तक किया जाएगा। - ***सचिव***

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़, गुजरात में 2 से 9 अप्रैल 2017 को क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामी-सम्बन्ध तथा ममत्व को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्ग दर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रात: 4 से रात्रि 9.30 तक रहेगी। शिविर शुल्क 1500 रुपये है। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- ***व्यवस्थापक : 02770 287417, 291555, मो. 09427059550***

सामवेद पारायण महायज्ञ एवं प्रवचन

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी के 33वें वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ एवं प्रवचन 23 फरवरी से 26 फरवरी 2017 तक आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं मुख्य यजमान माता चंचल मग्गो सपरिवार होंगे। वैदिक प्रवक्ता डॉ. विनय विद्यालंकार जी एवं भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ जी अपने सुमधुर भजन प्रस्तुत करेंगे। इस अवसर पर सायंकालीन सत्र में 6 से रात्रि 9 बजे तक कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया जाएगा। -***वेद प्रकाश, प्रधान***

अग्निहोत्र महोत्सव

अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड, गुजरात के तत्त्वाधान में अग्निहोत्र महोत्सव 19 मार्च 2017 प्रात: 10 से दोपहर 1 बजे आयोजित किया जा रहा है। आश्रम परिसर में 12 घण्टे 365 दिन निरन्तर चलने वाले यज्ञ का आयोजन गत एक वर्ष से चल रहा है। अनवरत चलने वाले इस यज्ञ में अब तक सहस्रों लोगों ने भाग लियाहै अग्निहोत्र प्रक्षिक्षण केन्द्र में आकर यज्ञ के साहित्य प्राप्त किए, यज्ञ पर आधारित चलचित्र देखा तथा प्रशिक्षकों के सहयोग से अनेकों ने यज्ञ का प्रशिक्षण प्राप्त किया और यज्ञ करने का संकल्प लिया गया।-***व्यस्थापक***

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर का 138वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कानपुर (मेस्टन रोड) का 138वां वार्षिकोत्सव 22 से 24 फरवरी तक आयोजित होगा। समारोह में वेद पारायण यज्ञ, नगर कीर्तन एवं महर्षि बोधोत्सव का आयोजन श्रद्धानन्द पार्क व डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर में होगा। - ***मन्त्री***

मनु का विरोध क्यों? विषय पर कार्यशाला सम्पन्न

मनुस्मृति के विषय में अनेक भ्रांतियां वर्तमान समाज में प्रचलित हो रही हैं। इन भ्रांतियों के चलते समाज में मनुवाद, ब्राह्मणवाद जैसे जुमले प्रसिद्ध हो रहे हैं जो सत्यता से कोसो दूर हैं। दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के अन्तर्गत श्री रवि देव जी गुप्ता के मार्गदर्शन में मनु का विरोध क्यों? विषय पर 12 फरवरी, 2017 को आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, दिल्ली में कार्यशाला संपन्न हुई। डॉ. विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता थे। कार्यक्रम को विस्तार देते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य जी ने जयपुर हाई कोर्ट में मनु महर्षि की प्रतिमा को हटाने के विरोध में किये गए पुरुषार्थ पर अपने विचार रखे। इस कार्यक्रम को आगे कॉलेज के छात्रों और युवाओं में प्रचारित किया जाये। इस विचार को सभी ने एकमत होकर स्वीकार किया। इस कार्यक्रम में विश्व हिन्दू परिषद अंतराष्ट्रीय वक्ता श्री विनोद बंसल एवं उनकी सहधर्मिणी विमलेश बंसल, डॉ. सरोज गुलाटी, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, दिल्ली यूनिवर्सिटी, डॉ. अनुराधा आनंद, सेवानिवृत प्रिंसिपल, दिल्ली यूनिवर्सिटी, आर्य चिंतक श्री योगेंद्र वधवा, आर्यसमाज सफदरजंग एन्क्लेव से श्री स्वदेश कुमार शर्मा, श्री वी के मुतरेजा, श्रीमती अंजू लखीरा, श्रीमती रीटा भंडारी, श्री अशोक सिंह रावत आदि ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉ. सुरेंद्र कुमार द्वारा लिखित पुस्तक मनु का विरोध क्यों? लघु पुस्तिका का वितरण किया गया। इस अवसर पर मंडल की ओर से डॉ. सुरेंदर कुमार कृत मनुस्मृति भाष्य का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कराने का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया जिससे उसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित किया जा सके। - ***मन्त्री***

स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न

आर्य समाज रावतभाटा का स्वर्ण जयन्ती समारोह 11 एवं 12 फरवरी 2017 को सोल्लास मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य यशवीर (गुड़गांव) भजनोपदेशक मोहित कुमार शास्त्री (बिजनौर) ने कार्यक्रम में अमृतोपदेश देकर आर्यजनों को मुग्ध कर दिया। समारोह में योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें वैकल्पिक चिकित्सा को प्रमुखता से लोगों ने सराहा। यज्ञ आचार्य यशवीर के ब्रह्मत्व में गुरुकुल भुसावर की ब्रह्मचारियों एवं गुरुकुल मलारना के ब्रह्मचारियों ने सम्पन्न कराया। कार्यक्रम में जड़ी-बूटी प्रदर्शनी, वैदिक साहित्य प्रदर्शनी, शोभायात्रा विभिन्न विद्यालयों के छात्र/छात्रओं द्वारा वैदिक विचारों पर आधारित एकांकी नाटक, समूह गान, भजन, बाल सम्मेलन, प्रतिभा, सम्मान समारोह इत्यादि कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

-***ओम प्रकाश आर्य***

महर्षि दयानन्द आदर्श गौशाला का नौवां वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द आदर्श गौशाला मरोड़ा, जिला नूंह मेवात हरियाणा का नौवां वार्षिकोत्सव 26 फरवरी 2017 को स्वामी शान्तानन्द वैदिक आश्रम मरोड़ा नूंह में आयोजित किया जा रहा है जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान, त्यागी तपस्वी, साधु संन्यासी राजनेता एवं दानी महानुभाव पधारेंगे।-***ज्ञानचन्द्र आर्य, मंत्री***

वार्षिक समारोह एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

वेद विद्या आर्ष गुरुकुलम् कुटिया नलवी खुर्द कुंजपुरा, करनाल (हरियाणा) का वार्षिक समारोह एवं चतुर्वेद पारायण सर्व कल्याण महायज्ञ 26 फरवरी से 26 मार्च 2017 तक आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी एवं संयोजक आचार्य विश्वम्भर जी होंगे।

-***स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती, अध्यक्ष***

श्री अखिलेश शर्मा को पत्नी शोक

आर्य समाज टैगोर गार्डन के प्रधान श्री अखिलेश शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती कमला शर्मा का 81 वर्ष की आयु में 16 फरवरी 2017 को निधन हो गया। ज्ञात हो आपका बेटा फौज में सेवारत था जोकि अब इस संसार में नहीं है। आपके भतीजे श्री पीयूष शर्मा विवेक विहार आर्य समाज के महामंत्री पद पर रहते हुए समाज सेवा में संलग्न हैं। श्रद्धांजलि सभा 19 फरवरी 2017 सायं 3 बजे आर्य समाज टैगोर गार्डन एसी ब्लाक, नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें विभिन्न समाजों के पदाधिकारी एवं आर्यजन उपस्थित हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।-सम्पादक

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23/24 फरवरी, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 फरवरी 2017

पृष्ठ 4 का शेष

गया। द्गोष को गजनी ले जाया गया। दूर-दूर के देशों से व्यापारी उनको खरीदने आये। मवाराउन-नहर ईराक, खुरासान आदि मुस्लिम देश इन गुलामों से पट गये। गोरे, काले, अमीर, गरीब दासता की समान जंजीरों में बँधकर एक हो गये।

13. सोमनाथ का पतन- अल-काजवीनी के अनुसार 'जब महमूद सोमनाथ के विध्वंस के इरादे से भारत गया तो उसका विचार यही था कि (इतने बड़े उपसाय देवता के टूटने पर) हिन्दू (मूर्ति पूजा के विश्वास को त्यागकर) मुसलमान हो जायेंगे। दिसम्बर 1025 में सोमनाथ का पतना हुआ। हिन्दुओं ने महमूद से कहा कि वह जितना धन लेना चाहे ले ले, परन्तु मूर्ति को न तोड़े। महमूद ने कहा कि वह इतिहास में मूर्ति-भंजक के नाम से विख्यात होना चाहता है, मूर्ति व्यापारी के नाम से नहीं। महमूद का यह ऐतिहासिक उत्तर ही यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि सोमनाथ के मंदिर को विध्वंस करने का उद्देश्य धार्मिक था, लोभ नहीं। मूर्ति तोड़ दी गई। दो करोड़ दिरहम की लूट हाथ लगी, पचास हजार हिन्दू कत्ल कर दिये गये। लूट में मिले हीरे, जवाहरातों, सच्चे मोतियों की, जिनमें कुछ अनार के बराबर थे, गजनी में प्रदर्शनी लगाई गई जिसको देखकर वहाँ के नागरिकों और दूसरे देशों के राजदूतों की आँखें फैल गई।

मौहम्मद गौरी : मौहम्मद गौरी नाम नाम गुजरात के सोमनाथ के भव्य मंदिर के विध्वंश के कारण सबसे अधिक कुख्यात है। गौरी ने इस्लामिक जोश के चलते लाखों हिन्दुओं के लहू से अपनी तलवार को रंगा था।

1. मुस्लिम सेना ने पूर्ण विजय प्राप्त की। एक लाख नीच हिन्दू नरक सिधार गये (कत्ल कर दिये गये)। इस विजय के पश्चात् इस्लामी सेना अजमेर की ओर बढ़ी-वहाँ इतना लूट का माल मिला कि लगता था कि पहाड़ों और समुद्रों ने अपने गुप्त खजाने खोल दिये हों। सुल्तान जब अजमेर में ठहरा तो उसने वहाँ के मूर्ति-मंदिरों की बुनियादों तक को खुदावा डाला और उनके स्थान पर मस्जिदें और मदरसे बना दिये, जहाँ इस्लाम और शरियत की शिक्षा दी जा सके।

2. फरिश्ता के अनुसार मौहम्मद गौरी द्वारा 4 लाख 'खोकर' और 'तिराहिया' हिन्दुओं को इस्लाम ग्रहण कराया गया।

3. इब्ल-अल-असीर के द्वारा बनारस के हिन्दुओं का भयानक कत्ले आम हुआ। बच्चों और स्त्रियों को छोड़कर और कोई नहीं बक्शा गया। स्पष्ट है कि सब स्त्री और बच्चे गुलाम और मुसलमान बना लिये गये।

तैमूर लंग : तैमूर लंग अपने समय का सबसे अत्याचारी हमलावर था। उसके कारण गांव के गांव लाशों के ढेर में तब्दील हो गए थे। लाशों को जलाने वाला तक बचा नहीं था।

1. 1399 ई. में तैमूर का भारत पर भयानक आक्रमण हुआ। अपनी जीवनी श्तुजुके तैमुरी में वह कुरान की इस आयत से ही प्रारंभ करता है श्ऐ पैगम्बर काफिरों और विश्वास न लाने वालों से युद्ध करो और उन पर सखती बरतो। वह आगे भारत पर अपने आक्रमण का कारण बताते हुए लिखता है। हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का मेरा ध्येय काफिर हिन्दुओं के विरुद्ध धार्मिक युद्ध करना है (जिससे) इस्लाम की सेना को भी हिन्दुओं की दौलत और मूल्यवान वस्तुएँ मिल जायें।

2. कश्मीर की सीमा पर कटोर नामी दुर्ग पर आक्रमण हुआ। उसने तमाम पुरुषों को कत्ल और स्त्रियों और बच्चों को कैद करने का आदेश दिया। फिर उन हठी काफिरों के सिरों के मीनार खड़े करने के आदेश दिये। फिर भटनेर के दुर्ग पर घेरा डाला गया। वहाँ के राजपूतों ने कुछ युद्ध के बाद हार मान ली और उन्हें क्षमादान दे दिया गया। किन्तु उनके असवाधान होते ही उन पर आक्रमण कर दिया गया। तैमूर अपनी जीवनी में लिखता है कि 'थोड़े ही समय में दुर्ग के तमाम लोग तलवार के घाट उतार दिये गये। घंटे भर में दस हजार लोगों के सिर काटे गये। इस्लाम की तलवार ने काफिरों के रक्त में स्नान किया। उनके सरोसामान, खजाने और अनाज को भी, जो वर्षों से दुर्ग में इकट्ठा किया गया था, मेरे सिपाहियों ने लूट लिया। मकानों में आग लगा कर राख कर दिया। इमारतों और दुर्ग को भूमिसात कर दिया गया।'

3. दूसरा नगर सरसुती था जिस पर आक्रमण हुआ। 'सभी काफिर हिन्दू कत्ल कर दिये गये। उनके स्त्री और बच्चे और संपत्ति हमारी हो गई। तैमूर ने जब जाटों के प्रदेश में प्रवेश किया।' उसने अपनी सेना को आदेश दिया कि 'जो भी मिल जाये, कत्ल कर दिया जाये।' और फिर सेना के सामने जो भी ग्राम या नगर आया, उसे लूटा गया। पुरुषों को कत्ल कर दिया गया और कुछ लोगों, स्त्रियों और बच्चों को बंदी बना लिया गया।'

4. दिल्ली के पास लोनी हिन्दू नगर था। किन्तु कुछ मुसलमान भी बंदियों में थे। तैमूर ने आदेश दिया कि मुसलमानों को छोड़कर शेष सभी हिन्दू बंदी इस्लाम की तलवार के घाट उतार दिये जायें। इस समय तक उसके पास हिन्दू बंदियों की संख्या एक लाख हो गयी थी। जब यमुना पार कर दिल्ली पर आक्रमण की तैयारी हो रही थी उसके साथ के अमीरों ने उससे कहा कि इन बंदियों को कैम्प में नहीं छोड़ा जा सकता और इन इस्लाम के शत्रुओं को स्वतंत्र कर देना भी युद्ध के नियमों के विरुद्ध होगा। तैमूर लिखता है- 'इसलिये उन लोगों को सिवाय तलवार का भोजन बनाने के कोई मार्ग नहीं था। मैंने कैम्प में घोषणा करवा दी कि तमाम बंदी कत्ल कर दिये जायें और इस आदेश के पालन में जो भी लापरवाही करे उसे भी कत्ल कर दिया जाये और उसकी सम्पत्ति सूचना देने वाले को दे दी जाये।' जब इस्लाम के गाजियों (काफिरों का कत्ल करने वालों को आदर सूचक नाम) को यह आदेश मिला तो उन्होंने तलवारें सूत लीं और अपने बंदियों को कत्ल कर दिया। उस दिन एक लाख अपवित्र मूर्ति-पूजक काफिर कत्ल कर दिये गये।

इसी प्रकार के कत्लेआम, धर्मातरण का विवरण कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्लतुमिश, खिलजी, तुगलक से लेकर तमाम मुगलों तक का मिलता है। अकबर और औरंगजेब के जीवन के विषय में चर्चा हम अलग से करेंगे। भारत के मुसलमान आक्रमणकारियों बाबर, मौहम्मद बिन-कासिम, गौरी, गजनवी इत्यादि लुटेरों को और औरंगजेब जैसे साम्प्रदायिक बादशाह को गौरव प्रदान करते हैं और उनके द्वारा मंदिरों को तोड़कर बनाई गई मस्जिदों व दरगाहों को इस्लाम की काफिरों पर विजय और हिन्दू अपमान के स्मृति चिन्ह बनाये रखना चाहते हैं। संसार में ऐसा शायद ही कहीं देखने को मिलेगा जब एक कौम अपने पूर्वजों पर अत्याचार करने वालों को महान सम्मान देते हों और अपने पूर्वजों के अराध्य हिन्दू देवी- देवताओं, भारतीय संस्कृति एवं विचारधारा के प्रति उसके मन में कोई आकर्षण न हो।

(नोट- इस लेख को लिखने में 'भारतीय मुसल्मानों के हिन्दू पूरवज ('मुसलमान कैसे बने' नामक पुस्तक लेखक पुरुषोत्तम, प्रकाशक- हिन्दू राइटर फोरम, राजौरी गार्डन, दिल्ली का प्रयोग किया गया है।)

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह